SUBURBAN MUSIC CIRCLE

presents

Shri MADHUKAR ATHALYE Memorial Programme

Follow us on:

Celebrating the birth centenary year of

Pt. Kumar Gandharva

'Hans Akela'

An Audio-Visual Presentation by

Dr. Suresh Chandvankar

(Hon. Secretary - Society of Indian Record Collectors, Mumbai)

On 11th June, 2023 at 5:30 pm to 7:30 pm

Sheila Raheja Hall, Rotary Service Center, Juhu Tara Road, Mumbai - 400 049.

Dr. Suresh Chandvankar,

Hon. Secretary,

'Society of Indian Record Collectors', Mumbai, India

Chandvankar.suresh@gmail.com

उड़ जाएगा हंस अकेला, जुग दर्शन का मेला जैसे पाट गिरे तरुवर से, मिलना बहुत दुहेला
ना जाने किधर गिरेगा, लगेया पवन का रेला जब होवे उमर पुरी, जब चुते गा हुकुम हुजूरी
जम के दूत बड़े मजबूत, जम से पड़ा झमेला दास कबीर हर के गन गावे, वाहर को परन पावे
गुरु की करनी गुरु जाएगा, चेले की करनी चेला

उड़ जाएगा हंस अकेला, जग दर्शन का मेला - *रहस्यवादी गीत*

Pandit Kumar Gandharva (8 April 1924 – 12 January 1992), originally known as Shivaputra Siddharamayya Komkalimath was an Indian classical singer, well known for his unique vocal style and for his refusal to be bound by the tradition of any *gharana*.
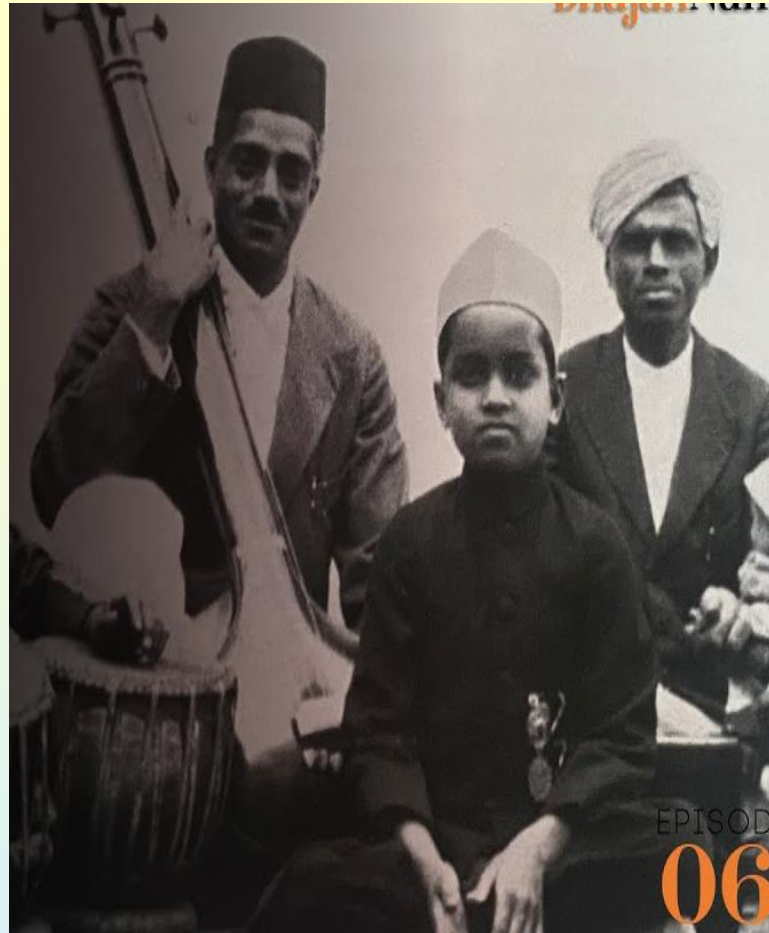
Ramkali & Bageshree (c.1937)

Gramophone Guru - Records of Karim Khan, Faiyaz Jhan, Bal Gandharva

First song ever sung – tappa – tat kari duhita – Asha Nirasha

तात करी दुहिता विनाशा । बल द्याया वेगे । माते धाव गे ॥
अर्पुनि म्लान मुखी । चुंबनधारा । घे हृदयी फुलवी जिवाला । तव माया वेगे । माते धाव गे ॥

Na batatai tu pehchan, bhool meri jaan

कॉलेजकन्यका भानुमती
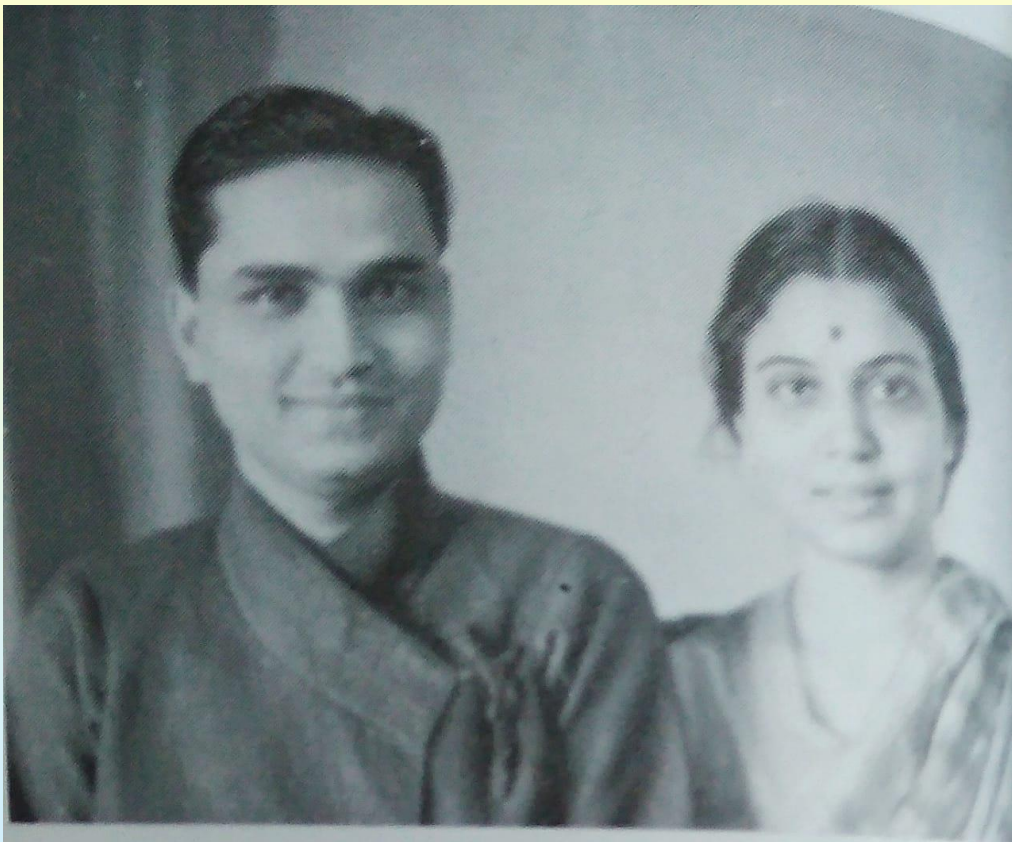
नवदांपत्य : कुमार आणि भानुमती

बालवयातच कुमार
असा पदकांकित झाला होता

निर्भीड—मुंबई रविवार ता. १ मार्च सन १९३६

संगीताचा अपूर्व जलसा.

बाल गवयांचा सम्राट

कुमार गंधर्व

'बालगवयांचा सम्राट' असे कुमारचे वर्णन करणारी ही मुंबईच्या 'निर्भीड'च्या अंकात १ मार्च, १९३६ रोजी छापलेली जाहिरात. तेव्हाही तो 'कुमार गंधर्व' याच नावाने ओळखला जायचा.
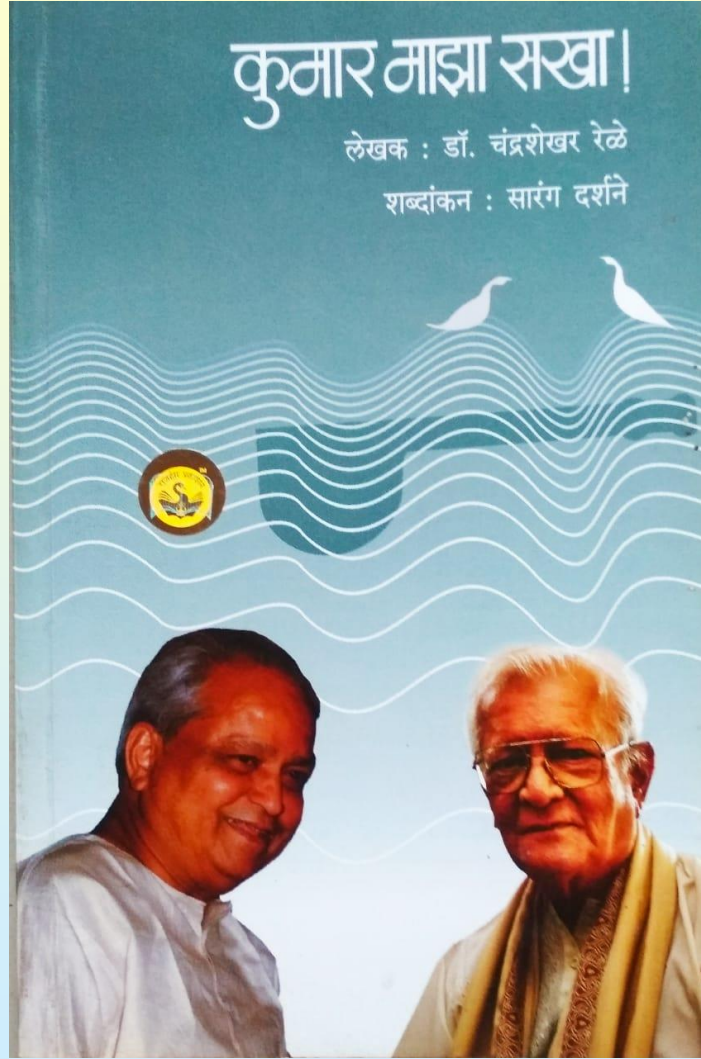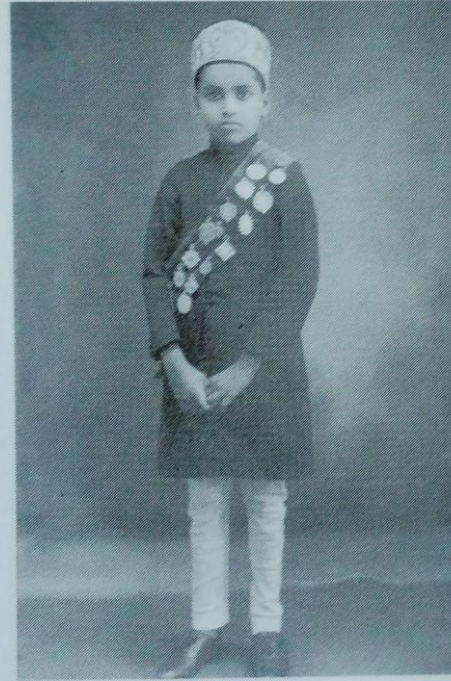
बालवयातला कुमार
देवधर मास्तरांकडे आला तेव्हा

देवधर मास्तर
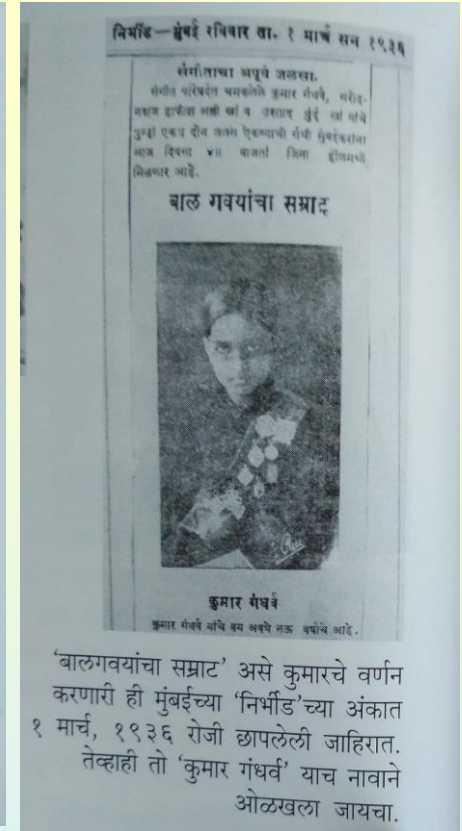
Vasantrao Deshpande, Kumar Gandharva & Bhimsen Joshi
Nutan Marathi Vidyalaya, Pune 1974 program
1hour, 56 minutes

Malvati, Amiri Basant, Sohoni & Bhajan (1974) – 20 minutes recording

Which ragas were created by Kumar Gandharva?
Sanjari, Malavati, Bihad Bhairava, Saheli Todi, Madhsurja
Gandhi Malhar and Sohoni Bhatiyar

मंगल दिन आज, बन्ना घर आयो
आनंद मन-भर, बनवारी भाई मैं तो
बन्ना रा मुख देख सहेल्यो मिल आयो
गावन लगी गीत, बनवारी भाई मैं तो
मंगल दिन आज...
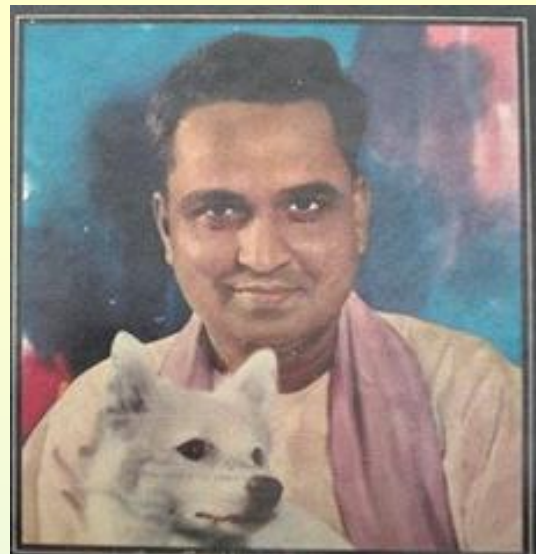
Raag Madhsurja. Note - the name is often wrongly interpreted as Madhu-surja (Madhu - honey). But the name actually refers to Madhya-soorya, referring to the blazing sun at noon.

==

बचाले मोरी मां मातारी घर में ललुवा अकेलो बिन मोहे || अरज यही तोरे पास मेरो यो है घर में ललुवा अकेलो बिन मोहे ||

ढोलिया बजाले अब तू रे करम करो तेरो हारो न हारो रे || माई की जो साध है जो है टारे न टारे कोई रे करम करो तेरो हारो न हारो रे ||

A lamb is being taken for Bali in front of Kali. When the lamb realizes this, it starts praying to save its life. This composition describes prayer of that lamb.

कुमार गंधर्व

मौज प्रकाशन गृह
मुंबई ४
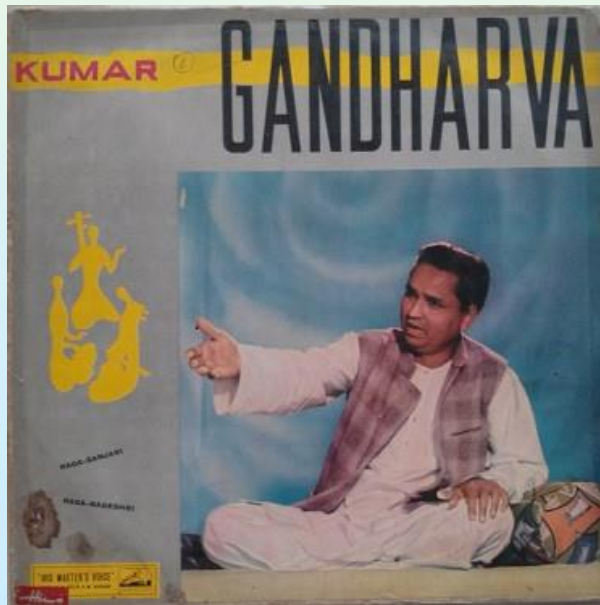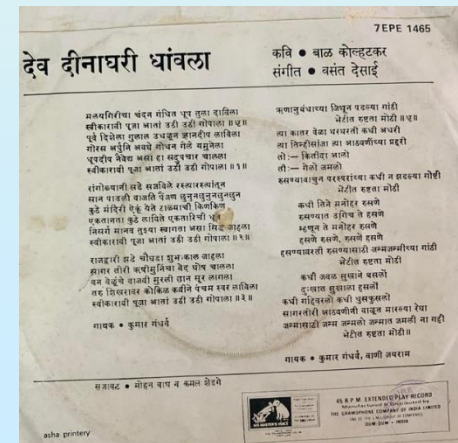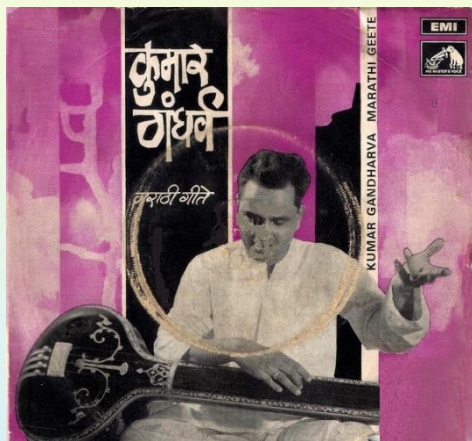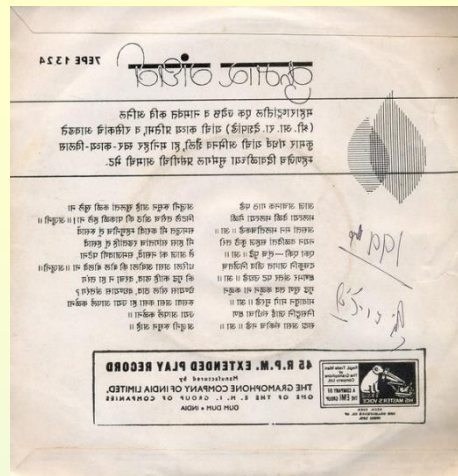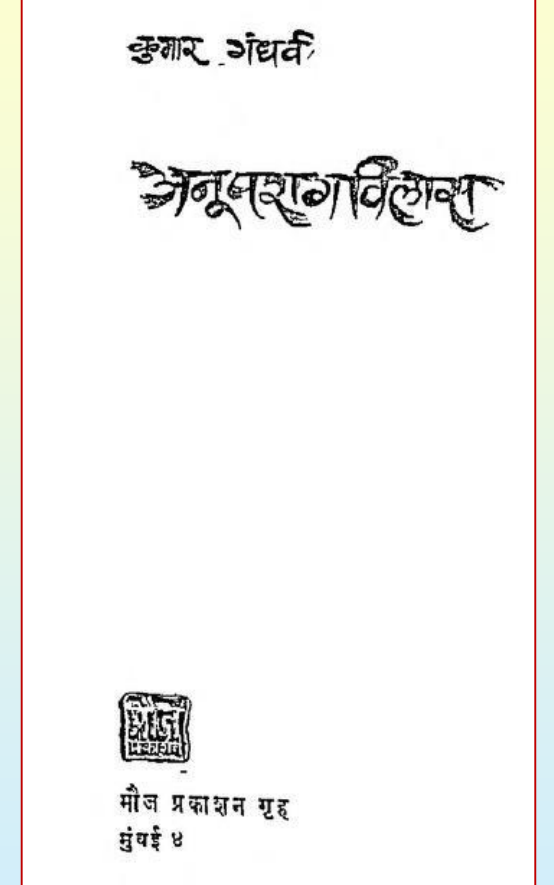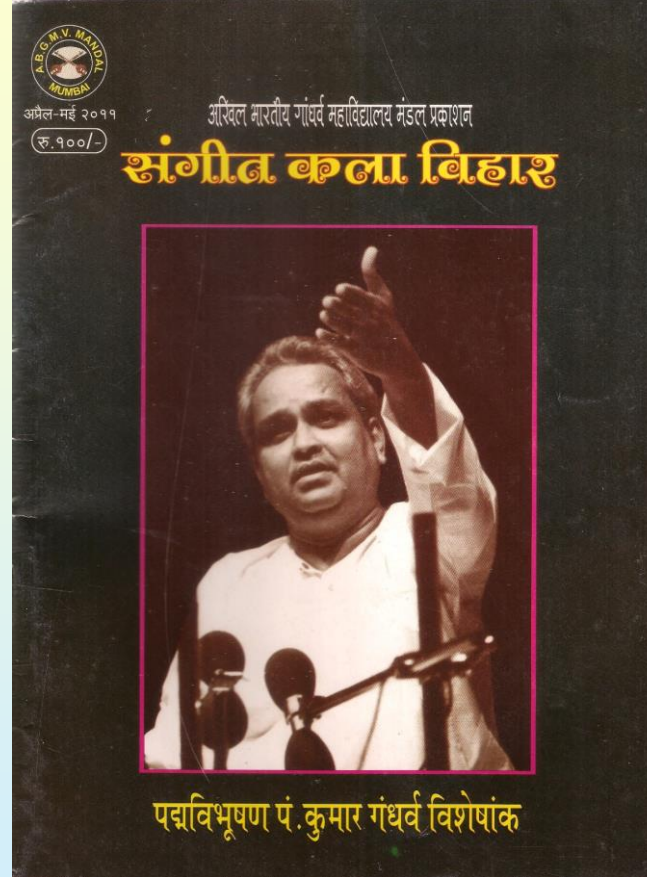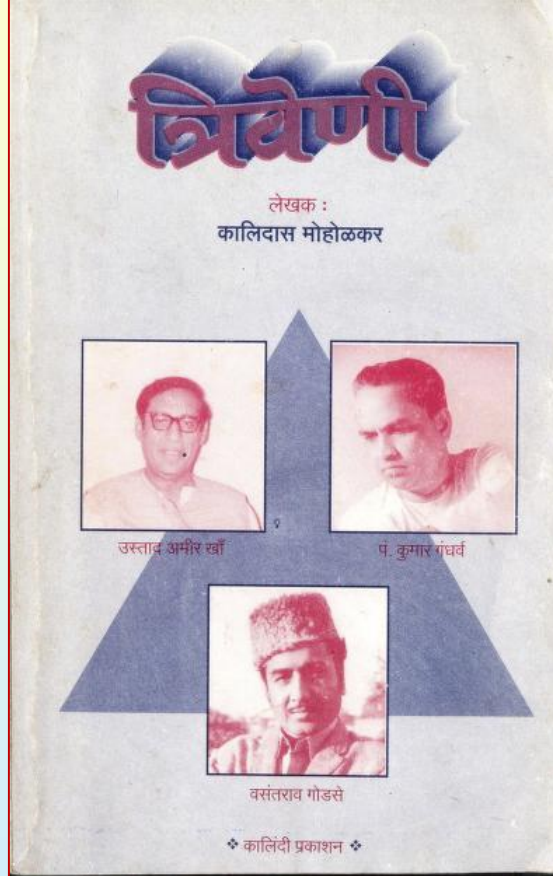
सखिया, वा घर सबसे न्यारा,
जहां पूरन पुरुष हमारा |
(मित्र, वह ही घर सब से अच्छा है जहाँ हमारे ईश्वर का निवास है)

Triveni, Meera Kabir, Tulsidas

Tambe darshan, Tukaram

जहां नहीं सुख दुख, साच झूट नहीं,
पाप न पुन्य पसारा |
नहीं दिन रैन, चांद नहीं सूरज,
बिन ज्योति उजियारा....सखिया |
(ईश्वर के घर में न सुख है, न दुःख; न सच न झूठ; न पाप न पुण्य; न दिन न रात; न चाँद न सूर्य, वहां पर हमेशा बिना किसी ज्योति के उजाला है)

नहीं तह ज्ञान ध्यान, नहीं जप तप,
वेद कित्तेब न बानी |
करनी धरनी रहनी गहनी,
ये सब जहां हिरानी....सखिया |
(वहां लौकिक ज्ञान, ध्यान, जप, तप, वेद, ग्रन्थ इत्यादि की आवशयकता नहीं. न ही कर्म करने व रहने इत्यादि की चिंता होती है. बड़े अचम्भे का घर है ईश्वर का)

धर नहीं अधर, न बाहर भीतर,
पिंड ब्रम्हंड कछु नाही |
पांच तत्व गुन तीन नहीं तह,
साखी शब्द न ताहीं....सखिया |
(वहां न किसी का अधर है, न वो निराधार है; उस घर की कोई अंदर या बाहर की सीमा नहीं; कोई पिंड या ब्रह्माण्ड भी नहीं; पांच तत्व अर्थात जल, वायु, अग्नि, आकाश तथा पृथ्वी, कुछ भी नहीं. मित्र उस घर की महिमा बताने के लिये उचित शब्द ही नहीं बन)

मूल न फूल, बेली नहीं बीजा,
बिना ब्रच्छ फल सोहे |
ओहम् सोहम् अर्ध उर्ध नहीं,
स्वास लेख न को है....सखिया |
(ईश्वर के घर में फूल, बेल, कन्द, बीज इत्यादि नहीं, वहां वृक्ष के बिना ही फल मिलते हैं. वहां ब्रह्मनाद नहीं, श्वास प्रक्रिया नहीं... यह सब जगत कि वस्तुएं हैं)

Mala Umajalele Bal Gandharva

Malva Ke Lokgeet, Nirguni Bhajans

जहां पुरुष तहवा कछु नाहीं,
कहे कबीर हम जाना |
हमरे संग लाखे जो कोई,
पावे पाद निर्वाना...सखिया |
(कबीर कहते हैं, मित्र, जहाँ पूर्ण पुरुष ईश्वर है वहां जगत कि वस्तुओं का क्या काम. जिसने मेरी दृष्टि से ईश्वर को देख लिया समझो उसने निर्वाण पद पा लिया)

सखिया, वा घर सबसे न्यारा:समाधि की उच्चतम स्थिति

इस अनुपम रचना में कबीर जी ने अपनी समाधि की स्थिति का सुंदर वर्णन किया है।

जहां नहीं सुख दुख, साच झूट नहीं,
पाप न पुन्य पसारा |
नहीं दिन रैन, चांद नहीं सूरज,
बिन ज्योति उजियारा....सखिया |

नहीं तह ज्ञान ध्यान, नहीं जप तप,
वेद कित्तेब न बानी |
करनी धरनी रहनी गहनी,
ये सब जहां हिरानी....सखिया |

धर नहीं अधर, न बाहर भीतर,
पिंड ब्रम्हंड कछु नाही |
पांच तत्व गुन तीन नहीं तह,
साखी शब्द न ताहीं....सखिया |

मूल न फूल, बेली नहीं बीजा,
बिना ब्रच्छ फल सोहे |
ओहम् सोहम् अर्ध उर्ध नहीं,
स्वास लेख न कौ है....सखिया |

**सखिया, वा घर सबसे न्यारा,
जहां पूरन पुरुष हमारा |**

जहां पुरुष तहवा कछु नाहीं,
कहे कबीर हम जाना |
हमरे संग लाखे जो कोई,
पावे पाद निर्वाना...सखिया |

Thanks

Dr. Suresh Chandvankar, Hon. Secretary,
'Society of Indian Record Collectors', Mumbai, India
Chandvankar.suresh@gmail.com